Q5. ध्रुविय क्षेत्र में रहने वाली एस्किमो जनजाति के निवास क्षेत्र, आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थिति तथा वर्तमान स्थिति का वर्णन करें।

→ ध्रुविय प्रदेश की टुन्ड्रा जलवायु में रहने वाली एक प्रमुख आखेटक जनजाति है एस्किमो। इनका जीवन अभी भी विकास की प्रारंभिक अवस्था में है। अपने भरण-पोषण हेतु ये आखेट, मछली मारने व भोजन संग्रहण पर निर्भर है। इनका अर्द्धभ्रमणशील जीवन अनेक कठिनाइयों से परिपूर्ण है। ये लोग शीत प्रदेशों में रहकर प्रकृति की विषमताओं को सहते हुए अत्यंत कठोर जीवन यापन करते हैं।

(i) निवास क्षेत्र (HABITAT) :- एस्किमो लोग सामान्यतः आर्कटिक टुण्ड्रा प्रदेश में सीमित हैं। ये लोग कनाडा के उत्तरी तट पर बैफिन द्वीप, हडसन की खाड़ी के उत्तरी भाग, अलास्का के तटीय क्षेत्र तथा ग्रीनलैंड में 60° N - 80° N अक्षांस तक निवास करते हैं। इस क्षेत्र में लम्बी व कठोर शीत ऋतु होती है। ग्रीष्म ऋतु अत्यंत छोटी होती है। वर्ष का तापमान 0° से -45°C तक रहता है। वर्षा हिम के रूप में होती है तथा बर्फीली आंधियाँ भी चलती हैं। वर्ष में 2-3 महीने तापमान 0°C से ऊपर रहता है तब बर्फ पिघलती है और शैवाल, लिचेन, काई, व कुछ रंग-बिरंगे फूल उग आते हैं। ग्रीष्म ऋतु के समाप्त होने पर फिर वही स्थिति लौट आती है और फिर कड़ाके की ठंड पड़ने लगती है।

(ii) शारिरिक विशेषताएँ :- प्रजातिय दृष्टिकोण से एस्किमो मंगोलायड प्रजाति से सम्बद्ध है। इनके चेहरे चौड़े, बाल काले तथा मोटे, आँखे गहरी, कत्थई रंग की होती हैं। आँखों की पलकें तिरछी,

Scanned with CamScanner

त्वचा का रंग पिला, औसत ऊँचाई 158 - 163 cm होती है।

(iii) भोजन (FOOD) :- एस्किमो लोग पूर्णत: मांसाहारी होते हैं। इनका व इनके परिवार का जीवन आखेट की उपलब्धता पर ही निर्भर होता है। इनके समस्त भोज्य पदार्थ शिकार से ही प्राप्त होते हैं इसी कारण ये लोग कुशल शिकारी बन जाते हैं, ये लोग सील मछली, वालरस, ह्वेल मछली, बारसिंघे व ध्रुविय भालू आदि का शिकार करते हैं। शिकार द्वारा प्राप्त मांस को ये लोग कच्चा ही खाते हैं।

शीतकाल में ये लोग बर्फ में छिद्र बना कर सील मछली का शिकार करते हैं जिससे मांस के अलावे ईंधन के लिए चर्बी, वस्त्र के लिए खाल, तथा स्लेज के लिए हड्डियाँ मिल जाती हैं। गर्मी के दिनों में ये लोग स्थल पर रहने वाले जीवों का शिकार करते हैं। जिसमें Reindeer तथा Caribou प्रमुख हैं।

(iv) वस्त्र (CLOTHES) :- एस्किमो लोगों के वस्त्र मुख्यत: शिकार में प्राप्त चमड़े के बने होते हैं। इसमें बारसिंगे (Reindeer), कैरिबो (Caribou) तथा सील मछली की खाल मुख्य है। कैरिबो की खाल विशेष रूप से उपयोगी होती है क्योंकि यह अधिक गर्म एवं हल्की होती है। कहीं-कहीं ध्रुविय भालू की खाल से भी वस्त्र बनाए जाते हैं। वस्त्र बनाने का कार्य मुख्यत: स्त्रियाँ करती हैं। इनके कपड़े वाटर-प्रूफ तथा सर से पैर तक होते हैं। बर्फ की चमक से बचने हेतु ये लोग वालरस के दाँत से बने चश्मे लगाते हैं।

(v) आवास (SHELTER) :- एस्कीमो जनजाति मकान बनाने की अपनी अनोखी कला के चलते विश्व

Scanned with CamScanner

मैं प्रसिद्ध है। लकड़ी व अन्य साधनों के अभाव में ये लोग अपने मकान हड्डियों के ढांचे पर बर्फ के टुकड़े रख कर बनाते हैं जिसके अन्दर दिवारों पर खाल मढ़ दी जाती है। इस मकान का आकार उल्टे कटोरे जैसा होता है जो इग्लू (IGLOO) कहलाता है। ठंड बढ़ने पर इग्लू की मजबूती भी बढ़ती जाती है। इग्लू में प्रवेश करने के लिए एक छोटा सा छिद्र होता है जिसमें से लेट कर अन्दर जाया जाता है। सामान्यतः इग्लू का व्यास 4m तथा ऊँचाई 3m होती है।

(vi) औजार (TOOLS):- इन्हे औजारों की आवश्यकता मुख्यतः शिकार हेतू पड़ती है। इनका सर्वप्रमुख औजार भाला है जिसे ये लोग हारपून (Harpoon) कहते हैं। जाड़े में हाथ में लेकर मारने वाले भालों का तथा गर्मीयों में जल में शिकार हेतू फेंक कर मारने वाले भालों का प्रयोग किया जाता है। मांस काटने के लिए मछली की हड्डीयों से बने औजारों का प्रयोग किया जाता है।

(vii) यातायात के साधन (MEANS OF TRASPORT):- इनके पास याता-यात का सर्वप्रमुख साधन मछली की हड्डीयों से बनी बर्फ पर फिसलने वाली स्लेज गाड़ी है। जो कुत्तों के द्वारा खींची जाती है। इसका प्रयोग मुख्यतः शीतकाल में किया जाता है।

ग्रीष्म काल में ये लोग आखेट के लिए एक नाव का प्रयोग करते हैं। हड्डीयों से बनी इस नाव पर खाल मढ़ी जाती है और इस नाव को कायक कहा जाता है। इसकी लम्बाई लगभग 6m होती है। इस नाव को सील मछली के चमड़े से बने तांतो द्वारा बांधा जाता है।

(viii) सांस्कृतिक जीवन (CULTURAL LIFE):- ये लोग सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत पिछड़े हुए हैं। ये लोग बहुत गन्दे रहते हैं कभी स्नान नहीं करते हैं, वस्त्रों के फट जाने पर ही फेंकते हैं। मनोरंजन के लिए नाच, कुश्ती व कुत्तों की सवारी करते हैं। स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देने के कारण इनकी औसत आयु बहुत कम होती है।

(ix) धार्मिक जीवन (RELIGIOUS LIFE):- एस्किमो लोग SUPER NATURAL POWERS में गहरा विश्वास रखते हैं। मध्य तथा पूर्वी तटीय भागों के एस्किमो सेडना नामक एक समुद्री देवी की पूजा करते हैं। इसके अलावे एस्किमो समाज के हरेक दल में एक जादूगर होता है जिसे बड़ा महत्व दिया जाता है। ये लोग मानते हैं कि जादूगर के शरीर में भूत वास करते हैं। जो किसी रोगी के ठीक होने की भविष्यवाणी करते हैं। परिवार में मृत्यु होने पर अधिक शोक नहीं मनाया जाता है तथा शवों को गाड़ने की प्रथा है।

(x) आधुनिक स्थिति (RECENT CONDITION):- आधुनिक सभ्य समाज के सम्पर्क में में आने इनके जीवन शैली में सकारात्मक परिवर्तन आया है। एस्किमो मूलत: एक आखेटक जनजाति थी लेकिन अब इस जाति के लोग उद्योग, यातायात व अन्य सेवाओ में काम करने लगे हैं। अब ये लोग धनुष-बाण की जगह बन्दूक का उपयोग करने लगे हैं। इस्पात का प्रयोग धड़ल्ले से प्रारंभ हो गया है। शिक्षा का प्रसार आरंभ हो गया है और ये लोग नई तकनिक को सहर्ष अपना रहे हैं। लेकिन ये प्रगति केवल टुन्ड्रा के सीमान्तर प्रदेशों में ही सीमित है। बाकि उत्तरी भाग में स्थिति यथावत बनी हुई है।

Scanned with CamScanner